# ओंकार की आरती

हृदय का दीपक, जीव की बाती, प्राण का होवे तेल।
प्रेम अग्नि, से दिया जला के, करें प्रभु से मेल।
जगमग-जगमग जले दिया उपकार की रे।
हम तो आरती उतारें ओंकार की रे।
थाल देह में धरा यह दीपक, काम पवन नहीं कोय।
अभ्यास हाथ से थाली पकड़े, चंचल मन नहीं होय।
द्वार बंद कर, हृदय मंदिर में, अपने प्रभु को निहार के रे।
हम तो आरती .....॥
तेज का तिलक ललाट पर शोभे पावन हो मुस्कान।
तन, मन, धन सब अर्पण करके प्राणनाथ धर ध्यान।
वेद मंत्र की आरती गावें, अपने प्रभु को पुकार के रे।
हम तो आरती.....॥
ज्ञान दीप की ज्योति से, अज्ञान तिमिर फट जाये।
शुभ भावों की लपटें निकलें, दुष्ट भाव हट जाये।
ओंकार परमानन्द को पावें, अपनी सुधि बिसार के रे।
हम तो आरती.....॥